अध्याय–19
पशुओं के लिए सामान्य औषधियाँ एवं उपयोग
(General medicines for animals and their use)

पशुओं का पूरा ध्यान रखते हुये भी वे कभी–2 अस्वस्थ हो ही जाते हैं। साथ ही वे एक दूसरे को चोट पहुँचा कर घायल कर देते हैं। पशुओं के गम्भीर बीमारी से ग्रस्त हो जाने पर तो उन्हें चिकित्सक के पास ले जाना आवश्यक हो जाता है परन्तु कभी–2 पशुओं की व्याधि ज्यादा बड़ी नहीं होती है। ऐसी स्थिति में यदि पशुपालक को व्याधियों तथा औषधियों की थोड़ी सी जानकारी हो तो वह अपने पशुओं को फार्म पर ही स्वयं ही इलाज कर सकता है। ऐसा करके वह समय, श्रम एवं धन की बचत कर सकता है। अतः इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुये पशु चिकित्सा विज्ञान में काम आने वाले कुछ महत्त्वपूर्ण पारिभाषिक शब्दों तथा सामान्य औषधियों के रुप, गुण तथा उपयोग का विवरण यहाँ दिया जा रहा है।

पशु चिकित्सा विज्ञान में प्रयोग किये जाने वाले कुछ पारिभाषिक शब्द

1. **प्रति जैविकी–(Antibiotics)** ऐसे रसायन जो फफूँदी (Moulds) अथवा जीवाणुओं (Bacteria) के द्वारा प्राप्त होते हैं तथा जो अन्य सूक्ष्म जीवों की वृद्धि को रोकते हैं और उन्हें नष्ट कर देते हैं, उन्हें प्रतिजैविकी कहते हैं जैसे– पैनिसिलीन, स्ट्रेप्टोमाइसीन, क्लोरोमाइसैटीन आदि।
2. **जीवाणु–रोधक या जीवाणु प्रतिरोधी (Antiseptic)–** वे औषधियाँ जो जीवाणुओं की वृद्धि को तो रोक देती हैं परन्तु उन्हें नष्ट नहीं करती हैं, जैसे– बोरिक एसिड, डिटॉल, आयोडीन, लाल दवा आदि।
3. **रोगाणुनाशक या जीवाणुनाशक–(Disinfectant)** ऐसी औषधियाँ रोगाणुओं को उनके बीजाणुओं सहित नष्ट कर देती हैं, रोगाणुनाशक या जीवाणुनाशक कहलाती हैं, जैसे– फिनायल, लायसोल, चूना, कार्बोलिक एसिड (फिनोल) आदि।
4. **विरेचक या रेचक–(Purgatives)** वे औषधियाँ अथवा पदार्थ जिन्हें खिलाये जाने पर दस्त आने लगते हैं, विरेचक या रेचक कहलाते हैं। इनको निम्नलिखित तीन वर्गों में बाँटा जा सकता हैं–

(अ) हल्के रेचक–(Laxatives) ये वे रेचक हैं जिनको खाने से सामान्य दस्त आने लगते हैं। उदाहरण– ईसबगोल की भूसी, शीरा, हरा चारा, गन्धक आदि।

(ब) मृदु रेचक–(Simple Purgatives) ये वे विरेचक होते हैं जो बिना ऐंठन के खुलकर दस्त ला देते हैं। उदाहरण– मैग्नीशियम सल्फेट, अरण्डी का तेल, अलसी का तेल, सोडियम सल्फेट आदि।

(स) तीव्र रेचक–(Drastic Purgatives) इनके खिलाने पर ऐंठन युक्त दस्त बार–2 आते हैं। उदाहरण– क्रोटन का तेल, बेरियम क्लोराइड का इन्ट्रावीनस इन्जैक्शन आदि।

5. **उत्तेजक–(Stimulant)** ये वे औषधियाँ अथवा पदार्थ हैं जो शरीर में उत्तेजना का अनुभव कराते हैं, जैसे– एल्कोहल, कपूर, कैफीन आदि।
6. **स्तम्भक–(Astringent)** ये वे पदार्थ हैं जो रक्त वाहिनियों श्लेष्मिक झिल्ली व तन्तुओं में संकुचन पैदा करके बहने वाले रक्त या द्रव को बन्द कर देते हैं। उदाहरण– टिंचर आयोडीन व फिटकरी बाह्य स्तम्भक तथा खड़िया, कत्था, अफीम आदि पतले दस्त को रोकने के लिए आन्तरिक स्तम्भक के रुप में प्रयोग किये जाते हैं।
7. **मर्दन तेल–(Massaging Oil)** वे तेल जिनका प्रयोग मालिश करने के लिए किया जाता है जैसे सरसों का तेल, तारपीन का तेल, तिल का तेल आदि।
8. **ज्वर रोधी–(Antipyretics)** वे औषधियाँ जो ज्वर (बुखार) में ताप कम करने के लिए दी जाती हैं, जैसे– एस्प्रिन, कुनैन, सैलीसिलिक अम्ल आदि।
9. **कफोत्सक–(Expectorants)** कफोत्सारक वे पदार्थ कहलाते हैं जो फुफ्फुस नाल के उदासर्जन (Secretions) को बढ़ाते, पतला करते हैं तथा उसे बाहर निकालते हैं जैसे– अमोनिया, उड़नशील तेल आदि।
10. **कफरोधी–(Anti Expectorant)** वे औषधियाँ जो फुफ्फुस नाल के उदासर्जन को कम करती हैं जैसे– अफीम, बैलाडोना आदि।
11. **विषध्न–(Antidotes)** वे औषधियाँ जो विष के प्रभाव को कम करने के लिए दी जाती हैं। उदाहरण– साइनाइड विष के लिए लौह लवण आदि।
12. **निश्चेतक–(Anaesthetics)** ये शरीर को अचेतन कर देती हैं इन्हें संवेदनहारी भी कहते हैं। उदाहरण– क्लोरोफार्म, ईथर, नाइट्रस आक्साइड आदि।

13. **एन्टी जाइमोटिक्स–(Anti-zymotics)** ये पदार्थ किण्वन क्रिया (Farmentation) को रोकते हैं। ये पेट दर्द या आफरा में गैसों का बनना रोकने के लिए दी जाती हैं। उदाहरण– बोरिक एसिड, फार्मलीन आदि।

14. **गैस हर या वातसारी–(Carminatives)** ये आमाशय व आँतों में गैस का बनना कम करने व उसे बाहर निकालने का कार्य करती हैं। जैसे हींग, सौंफ, जीरा, मेथी, ईथर आदि।

15. **पीड़ाहारी–(Analgesics)** ये पदार्थ स्नायुओं (Nerves) की उद्दीप्यता (Irritability) कम करके दर्द को कम करती हैं इन्हें शूल शामक (Anodynes) भी कहते हैं, जैसे अमोनिया, कपूर आदि की लिनीमैंट, एस्प्रिन, भांग आदि।

16. **शामक–(Sedative)** यह एक सामान्य पद हैं। इसमें शूल शामक और निद्रावह दोनों औषधियाँ शामिल हैं। जो स्नायु संस्थान की अति उत्तेजना को शांत करती हैं।

17. **संवेदन मंदक या निद्रावह–(Narcotics)** इनसे गहरी नींद आती है इसके साथ–2 संवेद्यता(Sensibility) रक्त परिसंचरण व श्वास क्रिया में भारी उदासीनता आ जाती है। उदाहरण– क्लोरोफार्म, ईथर, भांग, क्लोरल हाइड्रेट आदि।

18. **परजीविघ्न–(Parasiticides)** वे औषधियाँ जो त्वचा के परजीवियों (Parasites) को नष्ट कर देती है। इन्हें Antiparasitics भी कहा जाता हैं। उदाहरण– कॉपर सल्फेट, फिनाइल, मिथाइल पैराथियान आदि।

19. **गन्धहारक या दुर्गन्धनाशी–(Deodorants)** वे पदार्थ जो अरुचिकर गन्ध को दूर कर देते हैं या ढक लेते हैं। उदाहरण– फिनाइल, ब्लीचिंग पाउडर, आदि।

20. **कृमिहर–(Anthelmintics)** वे औषधियाँ या पदार्थ जो शरीर में उपस्थित, परजीवियों से मुक्ति दिला देती हैं उन्हें कृमिहर कहते हैं। जैसे– कॉपर सल्फेट, निकोटिन सल्फेट, फैरस सल्फेट, फिनोविस, तारपीन का तेल आदि।

इनमें से वे औषधियाँ जो आन्तरिक परजीवियों को नष्ट करती हैं कृमिनाशक कहलाती हैं। तथा जो औषधियाँ आन्तरिक परजीवियों या कृमियों को मारती नहीं हैं परन्तु शरीर से बाहर निकाल देती हैं, उन्हें कृमिहारक कहते हैं।

21. **वमनकारी–(Emetics)** वे औषधियाँ या पदार्थ जिनके खा लेने से वमन या उल्टियाँ होने लगती हैं। उदाहरण– नमक, नीला थोथा, फिटकरी, जिंक सल्फेट आदि।

22. **दाहक–(Caustics)** वे औषधियाँ या पदार्थ जो ऊतकों को जलाकर नष्ट कर देती हैं जैसे– कॉपर सल्फेट, लाल दवा, कॉस्टिक एल्कली, फिनोल, जिंक सल्फेट, जिंक क्लोराइड आदि।

निम्नलिखित सामान्य औषधियों के उपयोग मात्रा एवं देने की विधियाँ

(अ) रोगाणुनाशक औषधियाँ –

1. फिनाइल–(Phenyl)

पहचान– यह एक कत्थई रंग का विशेष गंधयुक्त तरल पदार्थ हेता हैं। इसे पानी में घोलने पर यह सफेद रंग का हो जाता हैं।
उपयोग– इसका उपयोग रोगाणुनाशक, गन्धहारक एवं पैरासिटीसाइड के रुप में किया जाता हैं।

प्रयोग विधि–

1. पशुशाला के फर्श, दीवारों, नालियों तथा अन्य गन्दे स्थानों को रोगाणुओं से मुक्त करने के लिए इसके 1 प्रतिशत घोल से धोना चाहिए।
2. इसके 1% घोल मुँहपका खुरपका रोग में पशुओं के खुरों को धोने के लिए प्रयोग किया जाता हैं।
3. परजीवियों जैसे– जुएं, किलनियों आदि को नष्ट करने के लिए फिनाइल के 1 से 2% घोल का प्रयोग किया जाता हैं।
4. पशुओं के शरीर के घावों तथा अन्य कटे हुये भागों को धोने के लिए इसके 1% घोल का प्रयोग करना चाहिए।

2. कार्बोलिक एसिड–(Carbolic Acid)

पहचान– यह सफेद, कणदार, मीठे स्वाद तथा तीखी गंध वाला पदार्थ है। यह पानी, एल्कोहल, ईथर एवं ग्लिसरीन में घुलनशील हैं। इसे फिनोल (Phenol) भी कहते हैं।
उपयोग– इसे जीवाणुरोधक, जीवाणुनाशक दाहक तथा पैरासिटीसाइड के रुप में प्रयोग किया जाता है। इसका आंतरिक प्रभाव शामक तथा एन्टीजाइमोटिक होता है।

प्रयोग विधि–

1. साँप या कुत्ते द्वारा काटे गये स्थान को जलाने के लिए इसे घाव पर शुद्ध रुप में लगाना चाहिए।
2. पशुशाला में सफाई के लिए इसका 5% घोल जीवाणुनाशक के रुप में प्रयोग किया जाता है।
3. इसके 1% घोल का प्रयोग घावों को धोने में किया जाता है।
4. पशु शरीर से परजीवियों यथा जूँ, पिस्सू, किलनियों आदि को मारने तथा खुजली रोग में इसका 2% घोल लाभदायक होता है।

3. पोटैशियम परमैंग्नेट या लाल दवा–(Potassium Parmagnate)

पहचान– यह गहरे बैंगनी रंग का कणदार, गन्धहीन पदार्थ है जिसका स्वाद मीठा एवं कसैला होता है। यह पानी में घोलने पर उसका रंग लाल कर देता है इसीलिए इसे लाल दवा भी कहा

जाता हैं।

उपयोग– लाल दवा का उपयोग जीवाणुरोधक, रोगाणुनाशक, गन्धहारक, विध्न दाहक (कॉस्टिक) तथा कृमिनाशक के रुप में किया जाता है।

प्रयोग विधि–

1. इसके 1% घोल का प्रयोग पशु चिकित्सा में काम आने वाले उपकरणों व यंत्रों तथा हाथों को जीवाणुरहित करने में किया जाता है।
2. पिसा हुआ पोटैशियम परमैंग्नेट छालों पर दाहक के रुप में प्रयोग किया जाता हैं।
3. साँप द्वारा काटे गये स्थान के पास में इसके 2% घोल का इंजेक्शन सर्वोत्तम विषध्न (Antidote) होता है। इसके अलावा काटे गये स्थान पर रवों को भर देना भी लाभदायक रहता हैं। क्योंकि यह साँप के जहर को ऑक्सीकृत कर देता हैं।
4. इसका 1% घोल घावों को धोने के लिए प्रयोग किया जाता है।
5. आन्तरिक परजीवियों को नष्ट करने के लिए इसका हल्का घोल पशुओं को पिलाया जाता है।

4. लाइसोल–(Lysol)

पहचान– यह भूरे रंग का द्रव होता है जो पानी में घुलने पर उसका रंग सफेद भूरा कर देता है। इसमें एक विशेष प्रकार की गन्ध होती है।

उपयोग– इसका उपयोग जीवाणुरोधक, रोगाणुनाशक, गन्धहारक तथा विषनाशक के रुप में किया जाता है।

प्रयोग विधि–

1. पशुशाला के फर्श, नालियों व दीवारों को रोगाणुओं से मुक्त करने के लिए इसका 1 से 2% घोल प्रयोग करना चाहिए।
2. पशुशाला, चिकित्सा के औजारों व उपकरणों को रोगाणु रहित करने के लिए लाइसोल का 1 से 2% घोल प्रयोग करते हैं।
3. पशुओं के घावों को धोने हेतु इसका 1% घोल प्रयोग में लाते हैं।
4. गर्भाशय को धोने (गर्भाशय डूश) के लिए इसका 1 से 2% घोल काम में लेते हैं।

(ब) विरेचक औषधियाँ–

1. मैगसल्फ या मैग्नीशियम सल्फेट–(Magsulf or Magnesium sulphate)

पहचान– यह ठोस कणदार, कड़वे या कसैले स्वाद वाला, सफेद तथा गन्धहीन पदार्थ है। यह पानी में घुलनशील है तथा जीभ पर रखते ही ठण्डा लगता है।

उपयोग– मैगसल्फ का उपयोग विरेचक तथा ज्वररोधी के रुप में करते हैं।

प्रयोग विधि–

1. गाय या भैंस के लिए इसकी 250 से 400 ग्राम मात्रा पेट साफ करने के लिए दी जाती है।
2. अधिक दस्त लाने के उद्देश्य से इसको समान मात्रा में नमक के साथ मिलाकर पशुओं को खिलाना चाहिए।
3. पशुओं (गाय व भैंस) का ज्वर कम करने हेतु इसकी 50 से 125 ग्राम मात्रा खिलानी चाहिए।
4. मोच या सूजन आने पर इसको पानी में घोलकर गाढ़ा घोल बनाकर लगाने से पशु को आराम मिलता है।

2. अरण्डी का तेल–(Castor oil)

पहचान– यह अरण्डी के बीजों से प्राप्त किया जाता है। यह रंगहीन या हल्के पीले रंग का, हल्की गंधयुक्त, गाढ़ा तरल पदार्थ है जो चखने पर प्रारम्भ में स्वादहीन परन्तु बाद में अरुचिकर लगने लगता है। यह एल्कोहल में घुलनशील है।

उपयोग– यह मृदुरेचक तथा प्रोटेक्टिव के रुप में प्रयोग किया जाता है।

प्रयोग विधि–

1. यह पेट साफ करने के लिए बड़े पशुओं को 600 से 1200 मि.ली. तथा छोटे पशुओं को 50 से 125 मि.ली. दिया जाता हैं।
2. बच्चे को खीस न मिलने की स्थिति में पेट साफ करने के उद्देश्य से 10 मि.ली. मात्रा दिन में 2 या 3 बार पिलानी चाहिए।
3. पशु की आँख में कोई बाह्य वस्तु गिर जाने अथवा घाव होने पर इस तेल की कुछ बूंदे प्रोटेक्टिव के रुप में डालने से लाभ मिलता है।

(स) उत्तेजक

1. एल्कोहल–(Alcohol)

पहचान– यह एक उद्योग उत्पाद है जो रंगहीन, पारदर्शक, विशेष गंधयुक्त पतला तरल पदार्थ है। यह खुला रखने पर वाष्पीकृत हो जाता है। यह शीघ्र आग पकड़ लेता है।

उपयोग– एल्कोहल उत्तेजना उत्पन्न करने वाला तरल पदार्थ है। इसका आन्तरिक प्रभाव उत्तेजक तथा बाह्य प्रभाव रोगाणुनाशक होता है।

प्रयोग विधि–

1. पशुओं को थकान दूर करने व सर्दी से बचाव के लिए प्रौढ़ पशु को 500 मि.ली. मात्रा देनी चाहिए।
2. पशुओं को निमोनिया व इन्फ्लूएन्जा आदि रोगों में आन्तरिक उत्तेजक प्रभाव उत्पन्न करने के लिए एल्कोहल पिलाया

जाता है।

3. इसका प्रयोग क्लोरोफार्म एवं टिंचर आयोडीन बनाने में भी किया जाता है।
4. मादा पशुओं को प्रसूति पीड़ा कम करने के उद्देश्य से भी इसे पिलाया जाता है।

2. कपूर–(Comphor)

पहचान– प्राकृतिक रुप से कपूर इसके पौधे की लकड़ी से आसवन विधि द्वारा प्राप्त किया जाता है। परन्तु इसे संश्लेषण विधि द्वारा भी बनाया जाता है। यह रंगहीन, पारदर्शक, विशेष गन्धयुक्त, ज्वलनशील, हल्का ठोस पदार्थ है जो वायु में खुला रखने पर वाष्पीकृत हो जाता है। कपूर स्वाद में कड़वा है परन्तु बाद में ठण्डा लगता है। यह एल्कोहल, ईथर व क्लोरोफार्म में शीघ्र घुल जाता है।

उपयोग– इसे उत्तेजक, जीवाणुरोधक, ज्वररोधी, कीटनाशी तथा गैसहर के रुप में उपयोग किया जाता है।

प्रयोग विधि–

1. कपूर तथा जैतून के तेल अथवा ईथर को 1:4 के अनुपात में मिलाकर पशुओं को सर्दी, जुकाम तथा खाँसी आदि से बचाने के लिए निम्नानुसार प्रयोग करना चाहिए–

   इंजेक्शन द्वारा– गाय व भैंस– 1.5 से 2.5 ग्राम
   मुँह द्वारा– गाय व भैंस– 10 से 15 ग्राम
   बकरी व भेड़– 1.5 से 3 ग्राम
2. कपूर को तुलसी के पत्तों के साथ पीसकर घावों पर लगाने से उनके कीड़े मर जाते हैं।
3. 100 ग्राम कपूर को 400 ग्राम मूँगफली के तेल में मिलाकर तैयार किया गये लिनीमैन्ट का लेप पशुओं की मोच, चोट दर्द आदि में लगाया जाता है।
4. छालों तथा घावों पर कपूर का निम्नलिखित जीवाणुरोधक पाउडर लगाने से बहुत लाभ होता है–
   कपूर 3.5 ग्राम, फिटकरी 7 ग्राम, जिंक ऑक्साइड 7 ग्राम, कार्बोलिक अम्ल 3.5 ग्राम तथा बोरिक अम्ल 2.25 ग्राम।
5. निमोनिया में 2 ग्रेन कपूर व 2 ग्रेन कस्तूरी को शहद में मिलाकर देने से पशु को आराम मिलता है।

(द) कृमिनाशक–

1. नीला थोथा–(Copper Sulphate)

पहचान– यह नीले रंग का कणदार, कसैले स्वाद वाला ठोस पदार्थ है। यह अधिक समय तक रखने पर हरे रंग का हो जाता है। यह उबलते पानी में घुलनशील है।

उपयोग– इसको कृमिनाशक, जीवाणुरोधक, वमनकारी तथा परजीविघ्न के रुप में उपयोग किया जाता है।

प्रयोग विधि–

1. इसके 1% घोल का प्रयोग आन्तरिक परजीवियों को नष्ट करने के लिए गाय–भैंस में 250–300 मि.ली. तथा भेड़–बकरी में 50–70 मि.ली. मात्रा में करना चाहिए।
2. इसके 1% घोल का प्रयोग मुँहपका रोग में पशुओं के खुरों को फुटबाथ या धोने के लिए किया जाता है।
3. दूषित चारागाहों में नीले थोथे के 2% घोल का छिड़काव करने से हानिकारक कीड़े नष्ट हो जाते हैं।

2. फिनोविस–(Phenovis)

पहचान– इसका दूसरा नाम फिनोथाइजीन भी है। यह बारीक चिकना चूर्ण है जिसका नींबू जैसा पीला रंग होता है। यह स्वादहीन, पानी में अघुलनशील तथा हवा में खुला रखने पर ऑक्सीकृत होने वाला पदार्थ है।

उपयोग– इसका उपयोग कृमिनाशी के रुप में किया जाता है।

प्रयोग विधि–

1. इसको पशुओं के आमाशय एवं आँत में उपस्थित कृमियों को नष्ट करने के लिए प्रयोग किया जाता हैं।
2. गाय–भैंस में 30 से 45 ग्राम तथा भेड़ बकरी में 15–30 ग्राम औषधि पानी में घोलकर नाल द्वारा दो समान भागों में बाँटकर दो बार देने से कृमि नष्ट हो जाते हैं।

(य) स्तम्भक–

1. टिंचर आयोडीन–(Tincture Iodine)

पहचान– इसका मुख्य अवयव आयोडीन है जो बड़े–2 कणों वाला, गहरा नीलापन लिए चमकदार काला रंग, कणदार, विशेष गन्ध युक्त, ठोस है जो हवा में खुला रखने पर उड़ जाता है। यह एल्कोहल में घुलनशील होता है। इससे टिंचर आयोडीन निम्न प्रकार से बनाते हैं–

1. पोटैशियम आयोडाइड–	5 ग्राम
2. आयोडीन–	5 ग्राम
3. स्प्रिट–	1000 मि.ली.
4. शराब–	1000 मि.ली.
5. पानी–	10 मि.ली.

उपयोग– इसका उपयोग जीवाणुरोधक, जीवाणुनाशक, स्तम्भक व परजीविघ्न के रुप में किया जाता है।

प्रयोग विधि–

1. टिंचर आयोडीन का प्रयोग पशु की त्वचा को जीवाणु रहित करने में किया जाता है।

   इसका प्रयोग घावों की सड़न रोकने में भी किया जाता है। इसे साधारण सफाई के लिए रोगाणुनाशक के रुप में तथा

मक्खियों को भगाने के लिए भी प्रयोग करते हैं।

2. फिटकरी–(Alum)

पहचान– यह रंगहीन अथवा हल्का गुलाबी रंग का, बड़े कणदार ठोस पदार्थ है। इसका स्वाद मीठापन लिए कसैला होता है तथा यह पानी में घुलनशील है।

उपयोग– यह स्तम्भक एवं जीवाणुरोधक, के रुप में उपयोग में लाई जाती है।

प्रयोग विधि–

1. पशुओं के घावों से बहते रक्त को रोकने के लिए इसके चूर्ण या घोल का प्रयोग किया जाता है।
2. इसका 2 से 5% घोल पशु की आँख व गर्भाशय धोने के काम आता है।
3. खुरपका–मुँहपका रोग में इसका 1 से 2% घोल पशु के मुँह में छालों में लाभदायक होता है।
4. आन्तरिक रक्त प्रवाह रोकने के लिए पशु को फिटकरी भी खिलाई जा सकती है।

(र) मर्दन तेल–

1. तारपीन का तेल–(Turpentine oil)

पहचान– यह रंगहीन, पतला एवं स्वच्छ द्रव है जो चीड़ के वृक्ष से प्राप्त किया जाता है। यह विशेष गन्धयुक्त तथा स्वाद में तीखा व कड़वा होता है। एल्कोहल, ईथर, क्लोरोफार्म व ऐसीटिक अम्ल में यह घुलनशील है।

उपयोग– इसका उपयोग जीवाणुरोधक, परजीवीनाशक, एन्टीजाइमोटिक तथा गैसहर आदि रुपों में किया जाता है।

प्रयोग विधि–

1. इसका प्रयोग निमोनिया तथा प्लूरसी आदि रोगों में पशु की छाती पर मालिश करने के लिए किया जाता है।
2. सूजन या दर्द में सरसों के तेल में मिलाकर मालिश करने से पशु को आराम मिलता है।
3. आफरे में इसकी 30–60 मि.ली. मात्रा अन्य तेलों के साथ मिलाकर पशु को पिलाने से लाभ होता है।

महत्त्वपूर्ण बिन्दु

1. फफूँदी या जीवाणुओं से प्राप्त रसायन जो अन्य सूक्ष्म जीवों की वृद्धि रोकते हैं, तथा उन्हें नष्ट कर देते हैं, प्रतिजैविकी (Antibiotics) कहलाते हैं। उदाहरण– पैनिसिलीन, स्ट्रेप्टोमाइसीन आदि।
2. वे पदार्थ जो जीवाणुओं की वृद्धि को तो रोक देते हैं परन्तु जीवाणुओं को नष्ट नहीं करते हैं, जीवाणु रोधक या जीवाणु प्रतिरोधी (Antiseptics) कहलाते हैं। जैसे– लाल दवा, बोरिक एसिड आदि।
3. जो औषधियाँ रोगाणुओं अथवा जीवाणुओं को उनके बीजाणुओं सहित नष्ट कर देती हैं, रोगाणुनाशक या जीवाणुनाशक (Disinfectant) कहते हैं, जैसे– फिनायल, लायसोल, फिनोल आदि।
4. विरेचक उन पदार्थों को कहते हैं जिनके खाने से पशु को दस्त आने लगते हैं। इन्हें हल्के रेचक, मृदु रेचक व तीव्र रेचक तीन वर्गों में बाँटा गया है।
5. ऐल्कोहल, कपूर आदि वे पदार्थ हैं जिनके प्रयोग से शरीर में उत्तेजना का अनुभव होता है।
6. टिंक्चर आयोडीन व फिटकरी स्तम्भक पदार्थ हैं। स्तम्भक पदार्थ वे होते हैं जो रक्त वाहिनियों, श्लेष्मा झिल्ली व तन्तुओं में संकुचन उत्पन्न कर बहते हुये रक्त या द्रव को रोक देते हैं।
7. ज्वर में तापक्रम को कम करने वाली औषधि को ज्वर रोधी (Antipyretic) कहते हैं, जैसे– एस्प्रिन, कुनैन आदि।
8. फुफ्फुस नाल के उदासर्जन (Secretion) को बढ़ाने वाली औषधि को कफोत्सारक (Expectorant) तथा इसे कम करने वाली औषधि को कफरोधी (Anti Expectorant) कहते हैं।
9. विष के प्रभाव को कम करने वाली औषधि को विषघ्न (Antidote) कहते हैं। जैसे– लाल दवा।
10. क्लोरोफार्म, ईथर जैसे पदार्थ शरीर को अचेत कर देते हैं। इन्हें निश्चेतक या संवेदनहारी (Anaesthetics) कहते हैं।
11. सड़ाव–क्रिया रोकन वाले पदार्थ एन्टीजाइमोटिक्स (Antizymotics) कहलाते हैं। उदाहरण– बोरिक एसिड, कार्बोलिक एसिड आदि।
12. गैसहर या वातसारी (Carminatives) पदार्थ आमाशय व आँतों में गैसों का बनना कम करने व उन्हें बाहर निकालने का कार्य करते हैं, जैसे– ईथर, हींग, सौंफ आदि।
13. पीड़ाहारी या शूल शामक (Analgesics) उन पदार्थों को कहा जाता है। जो स्नायुओं (Nerves) की उद्दीप्यता (Irritability) को कम करके दर्द को कम करने का कार्य करते हैं। उदाहरण– एस्प्रिन, भांग आदि।
14. संवेदनमंदक या निद्रावह (Narcotics) से गहरी नींद आने के साथ–2 संवेद्यता, रक्त परिसंचरण व श्वास क्रिया में भारी उदासीनता आ जाती है। उदाहरण– क्लोरोफार्म, ईथर, भांग आदि।

15. शामक (Sedative) के अन्तर्गत शूलशामक व निद्रावह दोनों प्रकार की औषधियाँ शामिल होती हैं जो स्नायु संस्थान की अति उत्तेज्यता को शांत करती हैं।
16. त्वचा के परजीवियों को नष्ट करने वाली औषधियाँ परजीविघ्न (Anti-parasitics या Parasiticides) कहलाती हैं जैसे– फिनायल, नीला थोथा आदि।
17. दुर्गन्ध को ढकने या दूर करने वाले पदार्थों को गन्धहारक या दुर्गन्धनाशी कहते हैं। उदाहरण– फिनाइल, ब्लीचिंग पाउडर आदि।
18. शरीर में उपस्थित कृमियों को जो औषधियाँ नष्ट कर देती हैं उन्हें कृमिनाशी (Vermifuge) तथा जो कृमियों को शरीर से केवल बाहर निकाल देती हैं उन्हें कृमिहारक कहते हैं।
19. नमक, नीला थोथा, फिटकरी आदि ऐसे पदार्थ वमनकारी (Emetics)कहलाते हैं जिनके खाने से वमन या उल्टी होने लगती है।

अभ्यास प्रश्न

बहुचयनात्मक प्रश्न–

1. निम्न पदार्थों में से रोगाणुनाशक हैं–
   (अ) सरसों का तेल (ब) फिनोविस
   (स) फिनाइल (द) उपर्युक्त सभी
2. पशुओं के घावों को धोने के काम में प्रयोग किया जाता है–
   (अ) लाल दवा (ब) नौसादर
   (स) अरण्डी का तेल (द) मैगसल्फ
3. उत्तेजक के रुप में काम लेते हैं–
   (अ) फिनोल (ब) फिनाइल
   (स) एल्कोहल (द) लाइसोल
4. खुरपका–मुँहपका रोग में खुर धोने हेतु फुट बाथ में काम आता है–
   (अ) फिनोविस (ब) आयोडीन
   (स) तारपीन का तेल (द) नीला थोथा

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न–

5. ज्वर में ताप कम करने वाली औषधियों को क्या कहते हैं?
6. जहर के असर को कम करने वाली औषधियाँ किस नाम से जानी जाती हैं?
7. उन औषधियों को क्या कहते हैं? जो कृमियों को बिना मारे ही शरीर से बाहर निकाल देती हैं?
8. बाह्य परजीवियों को नष्ट करने हेतु फिनाइल का कितने प्रतिशत घोल का प्रयोग किया जाता है?
9. पशुओं के 'पाद स्नान' (Foot bath) हेतु नीला थोथा का कितने प्रतिशत घोल को काम में लिया जाता है?
10. किन्हीं तीन प्रति जैविकी (Antibiotics) औषधियों के नाम लिखो।

लघूत्तरात्मक प्रश्न–

11. फिनाइल के दो उपयोग लिखो।
12. विरेचक किसे कहते हैं? ये कितने प्रकार के होते है? लिखिए।
13. उत्तेजक पदार्थों को परिभाषित कीजिए।
14. जीवाणुरोधक (Antiseptics) तथा जीवाणुनाशक (Antibiotics) में अन्तर लिखो।
15. कफोत्सारक (Expectorant) व कफरोधी (Anti-Expectorant) में अन्तर लिखिए।
16. कृमिनाशक (Vermicides) व कृमिहारक (Vermifuge) में अन्तर लिखिए।
17. प्रमुख दुर्गन्धहारक (Deodorants) पदार्थों के नाम लिखिए।

निबन्धात्मक प्रश्न–

18. किन्हीं दो रोगाणुनाशक पदार्थों का वर्णन कीजिए।
19. स्तम्भक क्या हैं? टिंचर आयोडीन बनाने की विधि, उसके उपयोग एवं प्रयोग विधि का वर्णन कीजिए।
20. कपूर की पहचान, उपयोग तथा प्रयोग विधि का वर्णन कीजिए।
21. मर्दन तेल किसे कहते हैं? तारपीन के तेल की पहचान, उपयोग तथा प्रयोग करने की विधि का वर्णन करो।
22. फिनोल (Carbolic-Acid) का विस्तृत वर्णन कीजिए।
23. निम्नलिखित पर टिप्पणी लिखो–
   (अ) लाल दवा (ब) अरण्डी का तेल
   (स) फिनोविस (द) लाइसोल
   (य) एल्कोहल (र) फिटकरी
   (ल) फिनाइल

उत्तरमाला–

1. (स) 2. (अ) 3. (स) 4. (द)